नवदेवता पूजन

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, जिनमन्दिर, जिनबिम्ब, जिनवाणी और जिनधर्म - ये ही नवदेवता हैं, जिनकी हम पूजा करते हैं।

गीता छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं॥
नवदेवता ये मान्य जगमें, हम सदा अर्चा करें।
आव्हानन कर थापें यहाँ मन में अतुल श्रद्धा धरें॥

ॐ ह्रीं अर्हंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालयसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आव्हाननं।

ॐ ह्रीं अर्हंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालयसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालयसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूं सदा॥
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

क्षीरोदधी के फेन सम सित तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सु चढ़ाय के॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

चंपा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजन सुमन अर्पण किये॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो काम वाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहूं नत भाल में॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊं सुज्ञान प्रकाश मैं॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊं सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठ, हों कर्म सब मुझको विदा॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊं थाल में।
उत्तम अनुपम मोक्ष फल के, हेतू पूजूं आज मैं॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलपदप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ्यसे पूजतमिले॥ नवदेवताओं...

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य
चैत्यालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

दोहा :- जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूं, श्रद्धा भक्ति समेत ॥१०॥ शांतये शांतिधारा
नानाविध के सुमन ले, मन में बहुत हरषाय।
मैं पूजूं नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय॥११॥ दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यों नमः।
(९, २७ या १०८ बार)

जयमाला

सोरठा

चिंच्चितामणिरत्न् तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊं गुणमणिमाल, जयवंते वर्तों सदा॥१॥

जय जय श्री अरिहंत देव देव हमारे।
जब घातिया को घात सकल जंतु उबारे॥
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूं।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूं॥२॥

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे है॥
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करे धनी॥३॥

जब साधु अठाईस गुणों को धरे सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा॥
यं पंच परमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें॥४॥

जिन धर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा॥
जिन की ध्वनि पियूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे॥५॥

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे है।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं॥
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसे॥६॥

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें॥
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूं।
संपूर्ण "ज्ञानमती" सिद्धि हेतु ही भजूं॥७॥

दोहा :- नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चहूं, निजपद में विश्राम॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से नव देवता पूजा करे।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।
नवनिधि अतुल भण्डार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुख सिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते॥९॥

इत्याशीर्वादः।